Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

नीमकाथाना क्षेत्र के मेलों का सांस्कृतिक महत्वः एक शोधात्मक अध्ययन

सविता सैनी
शोधार्थीए इतिहास विभाग
अपेक्स युनिवर्सिटी, जयपुर

सारांश

राजस्थान के सीकर जिले का नीमकाथाना क्षेत्र अपनी समृद्ध ऐतिहासिक, धार्मिक एवं लोक–सांस्कृतिक परंपराओं के कारण खास पहचान रखता है। यह क्षेत्र तोरावाटी और शेखावाटी संस्कृति के संगम स्थल के रूप में जाना जाता है जहाँ लोकजीवन में मेलों की महत्वपूर्ण भूमिका है। यहाँ आयोजित विभिन्न धार्मिक एवं लोक मेले केवल आस्था के केंद्र नहीं हैं अपितु सामाजिक एकता, सांस्कृतिक संरक्षण और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के प्रमुख आधार भी हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में नीमकाथाना क्षेत्र के प्रमुख मेलों जैसे – गणेश्वर धाम, बालेश्वर महादेव, टपकेश्वर महादेव, घुघाड़ी धाम, नरसिंह मंदिर, संतोषी माता तथा प्रीतमपुरी बालाजी का सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। नीमकाथाना के यह मेले स्थानीय लोककला, लोकगीत, पारंपरिक वेशभूषा, लोकभाषा तथा धार्मिक मान्यताओं को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। ये आयोजन ग्रामीण समुदायों के बीच पारस्परिक सहयोग, भाईचारे और सामाजिक समरसता को भी सुदृढ़ करते हैं। इन मेलों के माध्यम से स्थानीय व्यापार, हस्तशिल्प एवं लघु आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन प्राप्त होता है, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है। आधुनिकता और शहरीकरण के प्रभाव के बावजूद, नीमकाथाना क्षेत्र के मेले आज भी लोकसंस्कृति की जीवंत धरोहर के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए हैं।

मुख्य शब्द : नीमकाथाना, लोक मेले, धार्मिक परंपरा, लोकसंस्कृति, सामाजिक समरसता।

प्रस्तावना

नीमकाथाना राजस्थान राज्य के सीकर जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र है। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही विविध सांस्कृतिक परम्पराओं और धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। ब्रिटिश शासनकाल में नीमकाथाना का विशेष सामरिक महत्व था। उस समय यह क्षेत्र सेना के मुख्यालय के रूप में विकसित हुआ, जिसे वर्तमान में "छावनी" के नाम से जाना जाता है। इसकी स्थापना वर्ष 1834 ईस्वी में शेखावाटी ब्रिगेड[1] के गठन के उपरांत ब्रिटिश भारतीय सरकार द्वारा की गई थी। मध्यकालीन युग में नीमकाथाना निम्बार्क सम्प्रदाय का भी प्रमुख केन्द्र माना जाता था।[2] छावनी क्षेत्र में आज भी "छोटी जमात" तथा "बड़ी जमात" नामक मोहल्ले स्थित हैं, जो इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को दर्शाते हैं।

नीमकाथाना को राजस्थान में "हरियाली का हीरा" कहा जाता है। शेखावाटी अंचल के मध्य स्थित यह कस्बा केवल भौगोलिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि यह इतिहास, संस्कृति और संघर्ष की जीवंत पहचान भी है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इस क्षेत्र के लोगों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध साहस और स्वाभिमान का परिचय दिया तथा अपने अधिकारों और भूमि की रक्षा के लिए संघर्ष किया।

वर्तमान समय में नीमकाथाना शेखावाटी क्षेत्र के एक उभरते हुए विकास केन्द्र के रूप में स्थापित हो रहा है। शिक्षा, व्यापार, संस्कृति तथा सामाजिक विकास के क्षेत्रों में यहाँ निरंतर प्रगति हो रही है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि नीमकाथाना का प्रत्येक कोना अपने भीतर ऐतिहासिक गौरव, सांस्कृतिक समृद्धि और सामाजिक चेतना की प्रेरणादायक विरासत को संजोए हुए है।

तोरावाटी और शेखावाटी संस्कृति का संगम

राजस्थान की सांस्कृतिक परंपराओं में तोरावाटी और शेखावाटी क्षेत्र का विशेष महत्व रहा है। ये दोनों क्षेत्र अपनी विशिष्ट लोकसंस्कृति, ऐतिहासिक विरासत, धार्मिक आस्थाओं तथा सामाजिक जीवन शैली के कारण राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान को समृद्ध करते हैं। वर्तमान में सीकर जिले की नीमकाथाना तहसील तथा जयपुर जिले की कोटपूतली तहसील के कुछ भागों को सम्मिलित रूप से "तोरावाटी क्षेत्र" कहा जाता है। "तोरावाटी" नामकरण का संबंध यहाँ शासन करने वाले तोमरवंशी राजपूतों से माना जाता है[3], जिनका इस क्षेत्र के राजनीतिक एवं सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ऐतिहासिक परंपराओं के अनुसार हम्मीरदेव तोमर द्वारा पाटन राज्य की स्थापना की गई थी, जिसने इस क्षेत्र को एक संगठित सांस्कृतिक स्वरूप प्रदान किया।

नीमकाथाना क्षेत्र भौगोलिक रूप से शेखावाटी अंचल से जुड़ा होने के कारण यहाँ तोरावाटी और शेखावाटी दोनों संस्कृतियों का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। इस क्षेत्र की लोकभाषा, खान–पान, लोकगीत, लोकनृत्य, सामाजिक परंपराएँ तथा धार्मिक मान्यताएँ दोनों सांस्कृतिक धाराओं के प्रभाव को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती हैं। यहाँ बोली जाने वाली तोरावाटी भाषा में शेखावाटी बोली की मिठास और ग्रामीण जीवन की सहजता परिलक्षित होती है। मेलों और उत्सवों के अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीतों, कहावतों तथा लोककथाओं में स्थानीय इतिहास, वीरता, प्रेम और सामाजिक मूल्यों का सुंदर चित्रण मिलता है। तोरावाटी और शेखावाटी संस्कृति का सबसे सशक्त स्वरूप यहाँ आयोजित होने वाले मेलों एवं धार्मिक आयोजनों में दिखाई देता है। ये मेले केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि लोकजीवन की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के

महत्वपूर्ण मंच भी हैं। मेलों में पारंपरिक राजस्थानी वेशभूषा – महिलाओं द्वारा लहंगा, ओढ़नी एवं पारंपरिक आभूषण तथा पुरुषों द्वारा धोती, कुर्ता एवं साफा, क्षेत्रीय सांस्कृतिक पहचान को जीवंत बनाए रखते हैं। इन आयोजनों में लोककलाकारों द्वारा चंग, ढप, मंजीरा तथा अन्य पारंपरिक वाद्ययंत्रों की धुन पर लोकगीत और नृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं, जो जनमानस में उत्साह और सांस्कृतिक गौरव की भावना उत्पन्न करते हैं।

धार्मिक एवं ऐतिहासिक आस्था

नीमकाथाना क्षेत्र धार्मिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध माना जाता है। यहाँ स्थित प्राचीन मंदिर, तीर्थस्थल तथा धार्मिक धाम क्षेत्र की आध्यात्मिक चेतना और ऐतिहासिक विरासत के प्रतीक हैं। बालेश्वर महादेव, गणेश्वर धाम, टपकेश्वर महादेव, घुघाड़ी धाम तथा अन्य धार्मिक स्थल स्थानीय जनता की गहरी आस्था के केंद्र हैं। विशेष रूप से गणेश्वर धाम अपने प्राकृतिक गर्म जलकुंडों तथा ताम्रयुगीन सभ्यता के पुरातात्विक अवशेषों के कारण राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है। पुरातत्वविदों के अनुसार गणेश्वर क्षेत्र में प्राप्त ताम्र उपकरण यह सिद्ध करते हैं कि यह क्षेत्र प्राचीन सभ्यता और धातु संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है।[4]

शिवरात्रि, सावन मास तथा अन्य धार्मिक अवसरों पर यहाँ विशाल मेलों का आयोजन किया जाता है। इन मेलों में बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाग लेते हैं और शिवभक्ति, जलाभिषेक, भजन–कीर्तन तथा धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से अपनी आस्था प्रकट करते हैं। प्रकृति पूजा और धार्मिक विश्वास का यह समन्वय राजस्थान की पारंपरिक लोकआस्था की विशिष्ट पहचान है। इन धार्मिक आयोजनों से न केवल आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण होता है वरन् सामाजिक एकता और सांस्कृतिक निरंतरता को भी बल मिलता है।

स्थानीय हस्तशिल्प एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन

ग्रामीण मेलों का स्थानीय अर्थव्यवस्था के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्राचीन समय में जब आधुनिक बाजार व्यवस्था विकसित नहीं हुई थी, तब मेले ग्रामीण समाज के लिए व्यापारिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र हुआ करते थे। स्थानीय कारीगर, कुम्हार, लोहार, बढ़ई तथा हस्तशिल्पकार अपने उत्पादों को मेलों में प्रदर्शित एवं विक्रय करते थे। कृषि कार्यों में प्रयुक्त उपकरण, घरेलू उपयोग की वस्तुएँ, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी के सामान, हस्तनिर्मित खिलौने तथा धार्मिक मूर्तियाँ मेलों में विशेष आकर्षण का केंद्र होती थीं। ग्रामीण जनता वर्षभर की आवश्यक वस्तुओं की खरीद प्रायः मेलों से ही करती थी। इससे स्थानीय व्यापार को प्रोत्साहन मिलता था तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था सशक्त होती थी। मेलों के अवसर पर पशु व्यापार, कृषि उपकरणों की बिक्री तथा पारंपरिक हस्तशिल्प के क्रय–विक्रय से अनेक परिवारों की आजीविका जुड़ी रहती थी। वर्तमान समय में भी ये मेले स्थानीय उत्पादों को बाजार उपलब्ध कराने और ग्रामीण रोजगार को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसके अतिरिक्त मेलों में मिलने वाली पारंपरिक राजस्थानी मिठाइयाँ एवं व्यंजन जैसे घेवर, मालपुआ, दाल–बाटी–चूरमा, राबड़ी तथा कचौरी क्षेत्र की भोजन संस्कृति को संरक्षित करने में सहायक हैं। भोजन परंपरा के माध्यम से भी स्थानीय संस्कृति की निरंतरता बनी रहती है।

लोककला एवं सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण

नीमकाथाना क्षेत्र के मेले लोककला और लोकसंस्कृति के संरक्षण के जीवंत केंद्र हैं। इन आयोजनों में स्थानीय कलाकारों द्वारा राजस्थानी लोकगीत, भजन, कथाएँ तथा लोकनृत्यों की प्रस्तुतियाँ दी जाती हैं। विशेष रूप से होली के अवसर पर आयोजित मेलों में चंग एवं ढप की थाप पर गाए जाने वाले फाग गीत क्षेत्रीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान माने जाते हैं। इन गीतों में प्रेम, हास्य, वीरता और सामाजिक जीवन का भावपूर्ण चित्रण होता है। मेलों के दौरान दूर–दराज़ के गाँवों, ढाणियों तथा कस्बों से बड़ी संख्या में लोग एकत्रित होते हैं। इससे सामूहिक सांस्कृतिक सहभागिता का वातावरण निर्मित होता है। लोकसंगीत, नृत्य, नाटक तथा पारंपरिक खेलों के माध्यम से लोगों में उत्साह और सामुदायिक भावना का विकास होता है। इन आयोजनों के माध्यम से नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक परंपराओं एवं लोकधरोहर से परिचित होने का अवसर प्राप्त होता है।

आज के आधुनिक और वैश्विक परिवेश में, जहाँ पारंपरिक लोकसंस्कृतियाँ धीरे–धीरे विलुप्त होने की स्थिति में हैं, वहाँ ऐसे मेले सांस्कृतिक संरक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। पारंपरिक वेशभूषा, लोकभाषा और लोककलाओं का सार्वजनिक प्रदर्शन क्षेत्रीय पहचान को सुदृढ़ करता है तथा सांस्कृतिक गौरव की भावना को विकसित करता है।

सामाजिक समरसता एवं सामुदायिक संबंध

ग्रामीण मेलों ने प्राचीन समय से ही सामाजिक मेलजोल और सामुदायिक एकता के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में कार्य किया है। मेलों के अवसर पर विभिन्न गाँवों और क्षेत्रों के लोग एकत्रित होकर अपने रिश्तेदारों, मित्रों और परिचितों से मिलते थे। इस प्रकार मेले सामाजिक संपर्क और पारिवारिक संबंधों को मजबूत करने का प्रभावी माध्यम बनते थे। ग्रामीण समाज में वैवाहिक संबंधों की प्रारंभिक चर्चाएँ भी प्रायः मेलों के दौरान ही की जाती थीं। परिवार आपसी परिचय और सामाजिक विश्वास के आधार पर वैवाहिक संबंध स्थापित करते थे। इसके अतिरिक्त सामाजिक विवादों और मतभेदों का समाधान भी सामुदायिक स्तर पर मेलों के अवसर पर किया जाता था। इस प्रकार मेले सामाजिक समन्वय, संवाद और पारस्परिक सौहार्द के महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करते रहे हैं।

इन मेलों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इनमें सभी जातियों, वर्गों एवं समुदायों के लोग समान रूप से भाग लेते हैं। सामूहिक रूप से देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना तथा धार्मिक अनुष्ठानों में सहभागिता सामाजिक समरसता और भाईचारे की भावना को मजबूत करती है। इस प्रकार नीमकाथाना क्षेत्र के मेले केवल धार्मिक या सांस्कृतिक आयोजन नहीं हैं, बल्कि सामाजिक एकता, सांस्कृतिक संरक्षण और सामुदायिक जीवन के सशक्त प्रतीक भी हैं।

नीमकाथाना के प्रमुख मेले

(1) गणेश्वर धाम का मेला
(2) बालेश्वर महादेव का मेला
(3) टपकेश्वर महादेव का मेला
(4) घुघाड़ी धाम का मेला
(5) पृथ्वीराज महाराज का मेला (सिरोही में)
(6) नृसिंह मंदिर मेला (भूदोली में)
(7) प्रीतमपुरी बालाजी मेला
(8) सन्तोषी माता का मेला

गणेश्वर धाम मेला

गणेश्वर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं है बल्कि यह भारत की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक केंद्र भी रहा है। यह नीमकाथाना शहर से 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गणेश्वर का ऐतिहासिक महत्व बहुत विशाल है। यहाँ खुदाई में 2800 ईसा पूर्व (सिंधु घाटी सभ्यता के समकालीन) की ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष मिले हैं।[5] प्राचीन कांतली नदी के क्षेत्र पर बसा यह क्षेत्र कभी तांबे के उपकरणों के निर्माण का बहुत बड़ा केन्द्र था। यहाँ से सैंधव स्थलों को भी तांबा भेजा जाता था।[6] धार्मिक दृष्टि से इसे "गालव गंगा" के नाम से भी जाना जाता है मान्यता है कि यह महर्षि गालव की तपोभूमि रही है और यहाँ उनका आश्रम था।[7] यहाँ एक प्राकृतिक गर्म पानी का कुंड है, जिसके बारे में लोगों की गहरी आस्था है कि इसमें स्नान करने से कई प्रकार के चर्म रोग दूर होते हैं। इस कुंड की इतनी बड़ी मान्यता है कि लोग बिना स्नान किये यहाँ से नहीं जाते हैं। प्राचीन समय से ही इस कुंड की धार्मिक मान्यता बनी हुई है।

यहाँ मुख्य रूप से महाशिवरात्रि प्रतिवर्ष फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि और सावन के महीने में विशाल मेला लगता है। इस दौरान दूर–दूर से श्रद्धालु कांवड़ लेकर आते हैं और इसके पवित्र कुंड में स्नान करते हैं और भगवान शिव का जलाभिषेक करते हैं। इस मेले में रंग–बिरंगे खिलौने, झूले, मिठाईयां आदि की दुकानें लगायी जाती हैं, जिसे पर्यटक खरीदते हैं और बच्चे, मिठाईयाँ आदि का आनन्द लेते हैं। अतः गणेश्वर धाम मेले की प्राचीन समय से लगातार परम्परा धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से चली आ रही है।[8]

बालेश्वर महादेव मेला

अरावली की हरी–भरी पहाड़ियों, घने जंगलो और घुमावदार रास्तों के बीच स्थित बालेश्वर महादेव का मंदिर प्रकृति प्रेमियों और शिव भक्तों, दोनों के लिए एक स्वर्ग के समान है। स्थानीय किंवदंतियों व बड़े बुजुर्गों और मान्यताओं के अनुसार महाभारत काल में जब पांडव अपने अज्ञातवास पर थे तब उन्होंने कुछ समय अरावली की इन पहाड़ियों में बिताया था। ऐसा माना जाता है कि इस प्राचीन शिवलिंग की स्थापना या पूजा स्वयं पांडवों द्वारा की गई थी।

यहाँ पहाड़ों से निकलने वाला एक प्राकृतिक झरना और कुंड है, जो साल भर बहता रहता है। बारिश के मौसम में यहां की सुंदरता देखते ही देखते रह जाते हैं। यह स्थल अरावली की सुरम्य पहाड़ियों के बीच पर्यटकों को अपनी और इतना आकर्षित कर लेता है कि पर्यटक को दुबारा आने को मजबूर कर देता है, इस स्थल के देखने के बाद लोगों के मन को शांति और धार्मिक आस्था से ओत–प्रोत कर देता है।

बालेश्वर में सावन के प्रत्येक सोमवार और विशेषकर महाशिवरात्रि पर एक बहुत बड़ा मेला भरता है। इस दौरान यहाँ तोरावाटी और शेखावाटी की लोक संस्कृति के अनूठे रंग देखने को मिलते हैं। लोग यहाँ सपरिवार पिकनिक (स्थानीय भाषा में "गोठ") मनाने भी बड़ी संख्या में आते हैं। इस मेले के पहले दिन यहाँ रात्रिजागरण होता है, जिसमें लोगों की भीड़ जमा होती है, जिसमें भजन, नृत्य, आदि कलाकारों द्वारा प्रस्तुति दी जाती है, यह कार्यक्रम रात भर चलता है और दूसरे दिन मेले का आयोजन होता है।[9] अतः यह मेला प्राचीन समय से इसी तहर भरता आ रहा है, जो लोगों को धार्मिक और सांस्कृतिक आयामों का परिचय देता आ रहा है।

टपकेश्वर महादेव मेला

नीमकाथाना क्षेत्र में टपकेश्वर महादेव का मेला भी स्थानीय लोगों के बीच बहुत प्रसिद्ध मेला है। यहाँ एक प्राकृतिक गुफा में शिवलिंग स्थापित है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पहाड़ की चट्टानों से प्राकृतिक रूप से पानी की बूँदें लगातार शिवलिंग पर टपकती रहती हैं। इसी कारण इसे "टपकेश्वर" कहा जाता है।[10] यह मंदिर एक गुफा के भीतर हैं जहाँ "प्राकृतिक जलाभिषेक" के दर्शन के लिए भक्त लंबी कतारों में लगते हैं। टपकेश्वर महादेव पर मुख्य रूप से दो बड़े अवसर होते हैं जब श्रद्धालुओं का तांता लगता है।

महाशिवरात्रि पर यहाँ का सबसे बड़ा वार्षिक मेला होता है। फाल्गुन मास की चतुर्दशी को हजारों लोग दूर–दराज के गाँवों से यहाँ पहुँचते हैं। पूरे सावन के महीने में यहाँ लघु मेले जैसा माहौल रहता है। विशेषकर सावन के प्रत्येक सोमवार को यहाँ भारी भीड़ उमड़ती है, क्योंकि बारिश के मौसम में यहाँ के प्राकृतिक झरने और हरियाली अपने चरम पर होते हैं। इस मेले का स्वरूप पूरी तरह से ग्रामीण और आध्यात्मिक होता है। सावन के दौरान नीमकाथाना और आसपास के क्षेत्रों से युवा "बोल बम" के जयकारों के साथ पैदल कांवड़ लाकर यहाँ जल चढ़ाते हैं।

शिवरात्रि की पूरी रात यहाँ जागरण होता है। स्थानीय कलाकार ढोलक और मंजीरों के साथ पारंपरिक शिव भजन और 'महिमामृत' का पाठ करते हैं। इस अवसर पर पुरुष, महिला, बच्चे सभी भाग लेते हैं। मेले के दौरान मंदिर के नीचे मैदानी हिस्से में छोटी–छोटी दुकानें सजती हैं, यहाँ बच्चों के खिलौने, चूड़ियाँ, दैनिक वस्तुओं स्थानीय मिठाइयों (जैसे गर्म जलेबी और पकौड़े) मुख्य आकर्षण होते हैं।[11]

राजस्थान की परंपरा के अनुसार, कई परिवार और मित्रों के समूह यहाँ 'गोठ' करने आते हैं। लोग दाल–बाटी–चूरमा जैसे पारंपरिक व्यंजन खुले आसमान के नीचे लकड़ियों की आग पर बनाते हैं और मेले में आए हुए सभी भक्तों को प्रसादी के रूप में बांटते हैं।
यह मेला पूजा–पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्रकृति और मनुष्य के जुड़ाव का प्रतीक है। चूंकि यह स्थान दुर्गम पहाड़ियों में हैं, इसलिए यहाँ पहुंचने का रास्ता भी एक तरह की 'ट्रेकिंग' जैसा अनुभव देता है, जो युवाओं के बीच इसे काफी लोकप्रिय बनाता है।
बारिश के समय यहाँ का झरना पूरे वेग में होता है, जो मेले है की रौनक को और बढ़ा देता है। श्रद्धालु इस झरने के नीचे स्नान करना अत्यंत शुभ मानते हैं।

घुघाडी धाम मेला

राजस्थान के नीमकाथाना जिले में स्थित एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। यहाँ मुख्य रूप से शिवरात्रि और सावन के महीने में विशेष मेलों और कार्यक्रमों का आयोजन होता है। यह धाम नीमकाथाना के पास पहाड़ियों और प्राकृतिक सुंदरता के बीच स्थित है। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर यहाँ एक बड़ा मेला भरता है, जिसमें नीमकाथाना और आसपास के क्षेत्रों (जैसे – खेतड़ी, सीकर, पाटन) से भारी संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं।
यह स्थान अपने प्राचीन शिव मंदिर और यहाँ के शांत वातावरण के लिए जाना जाता है। सावन के सोमवारों में यहाँ कांवाड़ियों की अधिक संख्या में भीड रहती है। यहाँ मेले के अवसर पर राजस्थान के विभिन्न प्रान्तों से सन्त आते हैं।[12]

पृथ्वीराज महाराज का मेला (सिरोही में)

पृथ्वीराज जी महाराज को इस क्षेत्र में लोकदेवता के रूप में अत्यंत श्रद्धा के साथ पूजा जाता है। स्थानीय मान्यताओं के अनुसार वे चौहान वंश से संबंधित वीर योद्धा थे, जिन्होंने गौरक्षा एवं जनकल्याण के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। उनकी बहन सुरजाबाई का भी इस लोकआस्था में विशेष स्थान है, जिन्होंने वीरगति प्राप्त की थी। मंदिर परिसर में आज भी अखंड ज्योति प्रज्वलित रहती है, जो श्रद्धालुओं की अटूट आस्था का प्रतीक मानी जाती है।
स्थानीय ग्रामीणों एवं पुजारियों के अनुसार पृथ्वीराज जी महाराज जाखड़ एवं झाझड़िया समाज सहित अनेक समुदायों के इष्टदेव माने जाते हैं। राजस्थान ही नहीं, बल्कि पंजाब सहित अन्य राज्यों से भी श्रद्धालु यहाँ दर्शन के लिए आते हैं। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि महाराज जी की कृपा से जीवन की अनेक कठिनाइयों का समाधान होता है और मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।
मेले में पारंपरिक लोकसंस्कृति का भी जीवंत स्वरूप देखने को मिला। ग्रामीण वेशभूषा, लोकवाद्य, नगाड़ों की ध्वनि, धार्मिक गीत एवं सामूहिक सहभागिता ने मेले के वातावरण को अत्यंत उत्साहपूर्ण बना दिया। मन्दिर की परिक्रमा में सभी जातियों और वर्गों के लोगों ने समान रूप से भाग लिया जाता है, जो सामाजिक समरसता और सामुदायिक एकता का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत करता है। स्थानीय लोगों के अनुसार यह मेला केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि लोकआस्था, सामाजिक मेलजोल और भारतीय सनातन संस्कृति की निरंतरता का जीवंत प्रतीक है। प्रशासन द्वारा सुरक्षा एवं व्यवस्था के लिए भी उचित प्रबंध किए गए थे, जिससे मेले का आयोजन शांतिपूर्ण एवं व्यवस्थित रूप से संपन्न हुआ।

नृसिंह/नरसिंह मंदिर मेला (भूदोली)

नीमकाथाना क्षेत्र के भूदोली गाँव में स्थित नरसिंह मंदिर का मेला स्थानीय स्तर पर बहुत प्रसिद्ध है। यह मंदिर अपनी प्राचीनता और धार्मिक आस्था के लिए जाना जाता है। यह मेला "वैशाख शुक्ल चतुर्दशी" के आयोजन होता है अवसर पर विशाल मेले भरता है। इस दिन नीमकाथाना ही नहीं, बल्कि आसपास के जिलों से भी श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं और सभी लोग प्रसाद चढ़ा कर अपनी–अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण होने की प्रार्थना करते हैं। मेले के अवसर पर यहाँ बहुत बड़ी जनसंख्या में लोग दिखाई पड़ते हैं।
इस मेले के दौरान भगवान नरसिंह का विशेष अंगार' (श्रृंगार) किया जाता है। शाम के समय भगवान नरसिंह के अवतार और हिरण्यकश्यप वध की झांकी का मंचन भी किया जाता है
ऐसी मान्यता है कि यहाँ सिर टेकने से असाध्य रोगों से मुक्ति मिलती है, यह लोगों में एक बड़ी पवित्र धारणा बनी हुई है और पारिवारिक सुख–समृद्धि बढ़ती है। लोग यहाँ विशेष रूप से अपनी मन्नतें पूरी होने पर "सवामणी" (प्रसाद) चढ़ाने आते हैं।
इस मेले में स्थानीय ग्रामीण संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। यहाँ हाट–बाजार सजते हैं, जिनमें से लोग अपने काम में आने वाली दैनिक वस्तुए, मिठाईयों, खिलौने आदि सामान खरीदकर ले जाते हैं, जिसे हम पारंपरिक वस्तुओं की बिक्री के नाम से जानते हैं और इस मेले में कुश्ती जैसे खेलों का आयोजन भी देखने को मिलता है।
नीमकाथाना के पास स्थित श्री नरसिंह मंदिर को इस क्षेत्र का एक जागृत देवस्थान माना जाता है। यह मंदिर काफी पुराना है और इसकी स्थापत्य कला शेखावाटी के पारंपरिक मंदिरो जैसे है। यहाँ नियमित रूप से सुबह–शाम आरती होती है, लेकिन शनिवार और जयंती के दिन भक्तों की विशेष भीड रहती है। मंदिर क्षेत्र की धार्मिक और सांस्कृतिक आस्था का एक प्रमुख केंद्र है। यह मेला मुख्य रूप से भगवान "विष्णु" के नरसिंह अवतार की पूजा के लिए समर्पित है।

सन्तोषी माता मेला (छावनी)

नीमकाथाना में छावनी में स्थित संतोषी माता का मंदिर स्थानीय लोगों की आस्था का एक प्रमुख केंन्द्र है बना हुआ है। यहाँ हर साल आयोजित होने वाला मेला धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। सभी स्थानीय लोगो की पूजा–अर्चना में श्रद्धा का भाव दिखाई देता है। जिससे इस मंदिर की आकर्षक रूपी भावना लोगों में बढ़ती चली जा रही है।

छावनी में सन्तोषी माता का मुख्य मेला प्रतिवर्ष "बास्योड़ा" (शीतला अष्टमी) के अवसर पर भरता है। हिन्दू कैलेंडर के अनुसार यह चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को भरता है। होली के ठीक आठ दिन बाद "बास्योड़ा" के दिन यहाँ सबसे बड़ी भीड उमड़ती है। श्रद्धालु सुबह जल्दी माता के दर्शन करने और ठंडा भोजन (बासी भोजन) भोग लगाने आते हैं। मेले के अलावा, इस मंदिर में हर शुक्रवार को यहाँ विशेष माहौल रहा है, क्योंकि 'शुक्रवार' सन्तोषी माता का मुख्य दिन माना जाता है। इस दिन व्रत रखने वाले श्रद्धालु विशेष पूजा–अर्चना करने के लिए दूर–दूर से यहाँ आते हैं और अपनी मनोकामना पूर्ण होने की गुहार माता से लगाते हैं। संतोषी माता का मंदिर अपनी शान्ति और आध्यात्मिकता के लिए जाना जाता है।

भक्त यहाँ गुड़ और भुने हुए चने का ही प्रसाद चढ़ाते हैं, जो माता सन्तोषी को अत्यंत प्रिय माना जाता है, स्थानीय लोगों व किंवदन्तियों के अनुसार वर्षों से यही परम्परा चली आ रही है।

मेले के दौरान मंदिर परिसर के आसपास छोटी–छोटी दुकानें सजती हैं, जिनमें बच्चों के खिलौने, महिलाओं के श्रृंगार का सामान, घर में काम आने वाली वस्तुओं और खाने–पीने की दुकानें लगते हैं, जिनमें बच्चे, बूढ़े, सभी खाने का आनन्द लेते हैं और सभी लोग हंसते– कूदते नजर आते हैं।[13]

स्थानीय निवासियों का मानना है कि यहाँ श्रद्धापूर्वक भाव से पूजा–अर्चना करने से परिवार में सुख, शांति और संतोषी माता का वास होता है।

प्रीतमपुरी – बालाजी मेला

नीमकाथाना जिले में स्थित प्रीतमपुरी के हनुमानजी का मंदिर पूरे क्षेत्र में अटूट आस्था का केंद्र है। अरावली की सुन्दर पहाड़ियों की तलहटी में स्थित यह स्थान अपने शांत वातावरण और धार्मिक चमत्कार के लिए जाना जाता है।

अभी हाल ही में नीमकाथाना के प्रीतमपुरी बालाजी का मेला 5 मार्च, 2026 को आयोजित हुआ।[14] यह मेला "फाल्गुन मास की पूर्णिमा के पाँच दिन बाद आता है भरता है और इसमें करीब दो लाख श्रद्धालुओं के की भीड़ आती है। मेले में सुरक्षा व्यवस्था के लिए व्यापक इंतजाम किए जाते हैं और ड्रोन से निगरानी भी जाती है, इस तरह यहाँ लोगो का आवागमन लगा रहा है, मेले में लोक सांस्कृतिक कार्यक्रम में चंग, धमाल, नेहड़ा आदि कार्यक्रम का आयोज होता है। स्थानीय कलाकार अपनी–अपनी कला का प्रदर्शन बड़ी उत्साह के साथ प्रस्तुत करते हैं। मेले के समय यहाँ हाट–बाजार की दुकाने भी लगती हैं, जिसमें बच्चे व अन्य सभी लोग खाने–पीने की वस्तुएं व दैनिक वस्तुएं, खिलौने आदि खरीद कर ले जाते हैं, यहां मेले में झूले भी बड़ी संख्या में लगाये जाते हैं, जिन पर झूलने के लिए कतार लगी रहती है यहां मेले में पुरुष, महिला और बच्चे बड़े खुश नजर आते हैं।

ऐसी मान्यता है कि यहाँ आने वाले भक्तों के सभी शारीरिक और मानसिक कष्ट दूर होते हैं। विशेषकर "संकट" से मुक्ति के लिए लोग यहाँ "अरदास" लगाते हैं। इस मंदिर में हनुमान जी की प्रतिमा अत्यंत भव्य और प्राचीन है। माना जाता है कि यहाँ की गई सच्ची प्रार्थना कभी खाली नहीं जाती है। यह मंदिर प्राकृतिक रूप से बहुत समृद्ध स्थान पर है। यहाँ आने वाले भक्तों की मनोकामना पूर्ण होने पर भंडारे और सवामणी का भायोजन करते हैं।

पहाड़ी की तलहटी में होने के कारण बारिश के मौसम और सर्दियों में यहाँ का नजारा बहुत ही सुन्दर हो जाता है। नीमकाथाना शहर से यह लगभग 12–15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जहाँ लोग दर्शन के लिए बस या अपने निजी वाहन से आसानी से पहुंच सकते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः नीमकाथाना क्षेत्र के मेले इस क्षेत्र की धार्मिक आस्था, लोकसंस्कृति और सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण प्रतीक हैं। तोरावाटी और शेखावाटी संस्कृति के संगम के रूप में ये मेले लोकगीत, लोकनृत्य, पारंपरिक वेशभूषा तथा स्थानीय परंपराओं के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने तथा स्थानीय हस्तशिल्प और व्यापार को बढ़ावा देने का कार्य भी करते हैं।

इन मेलों के माध्यम से सामाजिक समरसता, आपसी भाईचारा और सामुदायिक एकता को भी मजबूती मिलती है, क्योंकि सभी वर्गों एवं समुदायों के लोग इसमें समान रूप से भाग लेते हैं। आधुनिकता के प्रभाव के बावजूद, नीमकाथाना क्षेत्र के मेले आज भी सांस्कृतिक विरासत और लोकआस्था के जीवंत केंद्र बने हुए हैं। अतः इन मेलों का संरक्षण और संवर्धन क्षेत्रीय संस्कृति की निरंतरता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ

1 शेखावत, रघुनाथसिंह, शेखावत और उनका समय, मल्लूसिंह स्मृति ग्रंथागार, सीकर, 1998, पृ. 633–634

2 शर्मा, नारायणदत्त, निम्बार्क सम्प्रदाय और उसके कृष्ण भक्त हिन्दी कवि, अशोका प्रकाशन, दिल्ली, 1964, पृ. 54

3 शर्मा, झाबरमल्ल, खेतड़ी का इतिहास (फुटनोट), पृ. 8

4 शर्मा, सी. एल., विराटनगर इन आर्काइव्ज एण्ड आर्कियोलॉजी, पृ. 26

5 अग्रवाल, आर. सी., आर्कियोलॉजिकल डिस्क्वरीज एट गणेश्वर राजस्थान, आर्कियोलॉजिकल स्टडीज, वॉल्यूम–प्प्, 1978, पृ. 72–75

6 अग्रवाल, डी. पी., एलोयिंग इन दि कॉपर हार्डस बुलेटिन ऑफ दी म्यूजियम्स एण्ड आर्कियोलॉजी इन यू. पी., लखनऊ, वॉल्यूम 14, 1974, पृ. 13–18

7 राजस्थान पत्रिका, सीकर संस्करण, 31 जुलाई, 2019
8 गणेश्वर मेले का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया
9 बालेश्वर महादेव मेले का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया
10 स्वामी गोपालराम : शेखावाटी सांस्कृतिक केन्द्र, नगर एवं कस्बे, पृ. 116
11 टपकेश्वर महादेव मेले का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया
12 घुघाडी धाम मेले का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया
13 संतोषी माता के मेले का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया
14 प्रीतमपुरा बालाजी के मेले का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया